**श्री हिंगुलायै नमः**

# सगाई-संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, चुनौतियाँ एवं समाधान

## 1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: स्वतंत्रता से २१वीं सदी तक का सफर

भारत की स्वतंत्रता के बाद से आज तक हमारे समाज की सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक परिस्थितियों में व्यापक परिवर्तन आए हैं। अतीत में सिंध (जो वर्तमान में पाकिस्तान का भाग है) और मारवाड़ हमारे समाज के मुख्य केंद्र हुआ करते थे। उस दौर में अधिकांश परिवार ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते थे और शिक्षा का प्रसार अत्यंत सीमित था।

इसके बावजूद, हमारे समाज के लोग ग्रामीण क्षेत्रों में अग्रणी और सम्मानित माने जाते थे। सामान्यतः तत्कालीन ग्रामीण समाज दो वर्गों में विभाजित देखा जाता था:

- प्रथम वर्ग: जो पूर्णतः अशिक्षित थे, जिन्हें स्थानीय बोलचाल में 'नौढ' भी कहा जाता था।
- द्वितीय वर्ग: जिन्हें अक्षरज्ञान था और जो बही-खाते लिखने एवं व्यावहारिक लेखा-जोखा रखने में सक्षम थे।

हमारे पूर्वज प्रायः इसी दूसरे वर्ग से संबंधित थे। अपनी साक्षरता, व्यावसायिक सूझबूझ और उत्कृष्ट लेखांकन कौशल के कारण उन्हें समाज में 'वणिक-बुद्धि' (व्यापारिक बुद्धि) वाला और नेतृत्वकारी माना जाता था।

### पारंपरिक रीति-रिवाज और वैवाहिक मान्यताएँ

उस दौर में रीति-रिवाजों और वैवाहिक परंपराओं को विशेष सामाजिक और धार्मिक मान्यता प्राप्त थी। सगाई-संबंधों के मामलों में हमारे समाज की अपनी एक विशिष्ट प्रतिष्ठा थी:

- **धर्म नारियल की परंपरा:** कन्या पक्ष द्वारा वर पक्ष के यहाँ सगाई का नारियल भेजा जाता था, जिसे **'धरम नारेल आना'** कहा जाता था। यह केवल एक रस्म या संबंध तय होने का संकेत नहीं था, बल्कि दोनों परिवारों की धार्मिक निष्ठा, आपसी अटूट विश्वास और सामाजिक मर्यादा का प्रतीक माना जाता था।
- **आयु और सहमति की गौणता:** उस समय लड़के-लड़की की आयु को कोई महत्व नहीं दिया जाता था; यहाँ तक कि कई बार गर्भस्थ शिशुओं के संबंध भी पहले से ही निश्चित कर दिए जाते थे। इस पूरी प्रक्रिया में लड़का-लड़की से पूछने या उन्हें इस विषय में अवगत कराने की कोई आवश्यकता ही नहीं समझी जाती थी।

### समाज का दूसरा पक्ष: 'आटा-साटा' प्रथा

किन्तु उस दौर का एक दूसरा और कठिन पक्ष भी था। विशेषकर 1950 और 1960 के दशकों में समाज में **'साटा'** अथवा **'आटा-साटा'** (पारस्परिक विवाह विनिमय) की प्रथा अत्यधिक प्रचलन में थी। कई परिवारों में लड़कों की सगाई के लिए साटा करना अनिवार्य माना जाता था और उसके अभाव में संबंध स्थापित होना अत्यंत कठिन हो जाता था।

- **साटा बकाया:** कुछ मामलों में भविष्य में (बेटी या बहन का) साटा देने के आश्वासन पर संबंध तय किए जाते थे, जिन्हें 'साटा बकाया' कहा जाता था। ऐसे मामलों में संबंधित पक्ष से साटा प्राप्त करने के लिए

आग्रह (मांग) लंबे समय तक, यहाँ तक कि दूसरी पीढ़ी तक बनाए रखा जाता था। समाज में साटे के अभाव के कारण पुरुषों के आजीवन कुंवारे रह जाने के उदाहरण भी देखे जाते थे।

- **सामाजिक विसंगति:** यद्यपि तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों में यह व्यवस्था प्रचलित थी, फिर भी एक दृष्टि से इसे एक कुरीति ही माना जा सकता है। कुछ दुर्लभ उदाहरण ऐसे भी मिलते हैं जिनमें साटा उपलब्ध न होने पर धनराशि के लेन-देन (रुपयों के आदान-प्रदान) के माध्यम से सगाई का मार्ग निकाला गया, जो निश्चय ही गंभीर सामाजिक विकृति के उदाहरण थे।
- **मर्यादा का पालन:** इन विसंगतियों और कठिन परिस्थितियों के बीच भी हमारे अनेक परिवार पुत्री एवं धर्म की मर्यादा को सर्वोपरि मानते थे। वे बिना किसी साटे के केवल 'धर्म नारियल' भेजकर अपने वचनों तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों का पूरी निष्ठा से पालन करते थे। ऐसे परिवारों को समाज में बहुत प्रतिष्ठित और आदरणीय माना जाता था।

# 2. समय चक्र के साथ सगाई-संबंधों में क्रमिक परिवर्तन

## १९७० और १९८० का दशक: शिक्षा का उदय और सोच में खुलापन

समय के साथ समाज में व्यापक सकारात्मक परिवर्तन आए। शिक्षा का प्रसार होने लगा और प्रारम्भ में लड़कों की शिक्षा को प्राथमिकता दी गई। वे विद्यालयों से आगे बढ़कर महाविद्यालयीन (कॉलेज) शिक्षा की ओर अग्रसर हुए। इसके साथ ही लड़कियों को भी प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने के अवसर मिलने लगे।

- 1970 के दशक में यह परिवर्तन स्पष्ट रूप से दिखाई देना प्रारम्भ हुआ और 1980 के दशक तक आते-आते लड़कियां भी उच्च शिक्षा की ओर बढ़ने लगीं। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक सोच में कुछ खुलापन आया और पारंपरिक व्यवस्थाओं में परिवर्तन दिखाई देने लगा।
- इसी काल में आटे-साटे की प्रथा का प्रभाव धीरे-धीरे कम होने लगा।
- **आग्रह के स्वरूप में बदलाव:** जहाँ 1960 के दशक तक वर पक्ष के परिजन कन्या पक्ष के समक्ष (रिश्ते के लिए) अनुनय-विनय करते दिखाई देते थे, वहीं 1980 के दशक में परिस्थितियां बदल गईं और अनेक मामलों में कन्या पक्ष, वर पक्ष के सामने आग्रह की स्थिति में आ गया।
- इसी दौर में सगाई संबंधों में लड़कों की राय लेने की शुरुआत हुई तथा धीरे-धीरे लड़के द्वारा "लड़की देखने" जाने की परंपरा भी प्रारम्भ हुई। हालांकि, उस समय तक कन्याओं को अपेक्षाकृत सीमित सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त थी और परिवार द्वारा तय किए गए संबंधों को स्वीकार करना ही सामान्य बात थी।

**निर्णय की दृढ़ता:** उस दौर में सगाई अथवा बात पक्की हो जाने के बाद उससे पीछे हटने की कल्पना भी नहीं की जाती थी। विवाह विच्छेद (तलाक) समाज में लगभग अकल्पनीय था और सगाई का टूट जाना भी अत्यंत गंभीर एवं अपमानजनक घटना माना जाता था। ऐसे मामलों के लिए समाज के अपने नियम और व्यवस्थाएं थीं। पीड़ित पक्ष द्वारा पुकार किए जाने पर समाज के विशेष सम्मेलन आयोजित होते थे और सामाजिक स्तर पर ही निर्णय अथवा न्याय किया जाता था। स्पष्टतः, सगाई का निर्णय मुख्य रूप से परिवारों के हाथ में होता था तथा एक बार निर्णय हो जाने के बाद उससे पीछे हटना अत्यंत कठिन माना जाता था।

## २१वीं शताब्दी: आधुनिकता और नए सामाजिक समीकरण

इक्कीसवीं शताब्दी के आगमन के साथ परिस्थितियां पुनः अत्यंत तीव्र गति से बदलीं। महिला शिक्षा का अभूतपूर्व विस्तार हुआ और समाज की युवतियां उच्च शिक्षा तथा विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में तेजी से आगे बढ़ने लगीं। इसके फलस्वरूप "कामकाजी महिला – Working Woman" एक सामान्य सामाजिक वास्तविकता बन गई।

- अब सगाई संबंधों में केवल युवकों की ही नहीं, बल्कि युवतियों की राय भी उतनी ही महत्वपूर्ण मानी जाने लगी। अनेक मामलों में निर्णय प्रक्रिया में उनकी भूमिका निर्णायक होने लगी।
- इसी काल में एक और महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई दिया। शिक्षा के क्षेत्र में लड़कियां अनेक स्थानों पर लड़कों से आगे निकलने लगीं। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक समीकरणों में पुनः बदलाव आया और कई परिस्थितियों में वर पक्ष पुनः कन्या पक्ष के सामने अधिक आग्रहशील दिखाई देने लगा।

# 3. वर्तमान स्थिति, जिसे एक समस्या के रुप में भी देखा जा रहा है, के कारण

वर्तमान में सगाई संबंधों की स्थापना में अनेक कठिनाइयां व जटिलताएं आ खड़ी हुयी हैं। सतही तौर पर इसके अनेक कारण बताए जाते हैं, किंतु जब हम इस विषय पर गहराई से विचार करते हैं तो एक महत्वपूर्ण तथ्य उभरकर सामने आता है—यह परिवर्तन केवल सामाजिक नहीं, बल्कि भूमिकाओं और वर्चस्व की पारंपरिक धारणाओं के पुनर्संतुलन का परिणाम भी है।

निःसंदेह बीसवीं शताब्दी तक समाज में पुरुष प्रधानता की स्थिति विद्यमान रही। महिलाओं के प्रति सम्मान अवश्य था, परंतु सामाजिक संरचना में उन्हें पुरुष के समकक्ष स्थान प्राप्त नहीं था। कार्यक्षेत्र स्पष्ट रूप से विभाजित थे। व्यापार, नौकरी, प्रशासन तथा अधिकांश बाह्य गतिविधियाँ पुरुषों के हाथ में थीं, जबकि महिलाओं की भूमिका मुख्यतः परिवार और गृहस्थी तक सीमित मानी जाती थी। निर्णय लेने की प्रक्रिया में भी पुरुषों का वर्चस्व था और यह व्यवस्था व्यापक रूप से स्वीकार्य थी।

समय के साथ परिस्थितियाँ बदलीं। शिक्षा के प्रसार और सामाजिक जागरूकता ने महिलाओं को नए अवसर प्रदान किए। उन्होंने न केवल शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की, बल्कि अनेक क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर अपनी क्षमता सिद्ध की। हमारे समाज के उपलब्ध आँकड़े भी यही संकेत देते हैं कि शिक्षा और कई पेशेवर क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी और उपलब्धियाँ निरंतर बढ़ रही हैं।

इस परिवर्तन के साथ एक नया सामाजिक समीकरण विकसित हो रहा है। सदियों से स्थापित भूमिकाएँ बदल रही हैं और इसी प्रक्रिया में कहीं-कहीं अपेक्षाओं, अधिकारों और निर्णय-क्षेत्रों को लेकर टकराव की स्थितियाँ भी दिखाई देती हैं। हम वस्तुतः एक संक्रमण काल के साक्षी हैं, जहाँ पुरानी मान्यताएँ और नई आकांक्षाएँ साथ-साथ चल रही हैं।

आज पुरुष प्रधानता को चुनौती मिल रही है और महिला सशक्तिकरण को व्यापक स्वीकृति भी प्राप्त है। समाज का लगभग प्रत्येक वर्ग—यहाँ तक कि वे वरिष्ठजन भी, जो कभी पारंपरिक पुरुष सत्ता के समर्थक रहे होंगे—महिला शिक्षा और उन्नति का समर्थन कर रहे हैं। अधिकांश परिवार अपनी बेटियों को उच्च शिक्षा, आत्मनिर्भरता और करियर निर्माण के अवसर उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

इसी परिवर्तित सोच का प्रभाव वैवाहिक संबंधों पर भी दिखाई देता है। युवतियाँ और उनके परिवार अब ऐसे जीवनसाथी तथा पारिवारिक वातावरण की तलाश करते हैं जहाँ शिक्षा, करियर, व्यक्तिगत विकास और समान अवसरों का सम्मान हो। करियर निर्माण को प्राथमिकता दिए जाने तथा जीवन के प्रति बढ़ती अपेक्षाओं ने वैवाहिक निर्णयों को पहले की तुलना में अधिक जटिल बना दिया है। संभव है कि इस विश्लेषण से सभी सहमत न हों, किंतु अनेक संकेत इसी दिशा की ओर इंगित करते हैं।

# 4. समाधान

जहाँ तक समाधान का प्रश्न है, वर्तमान स्थिति को एक स्वाभाविक सामाजिक संक्रमण के रूप में देखा जा सकता है। समय के साथ जब नई भूमिकाएँ, अपेक्षाएँ और संबंधों के मानदंड अधिक स्पष्ट और संतुलित रूप से स्थापित हो जाएंगे, तब वर्तमान तनाव और असमंजस भी कम होंगे। दीर्घकालिक समाधान किसी एक पक्ष की प्रधानता में नहीं, बल्कि परस्पर सम्मान, सहयोग, समान अवसर और साझा उत्तरदायित्व की भावना में निहित है। संभवतः भविष्य का समाज इसी संतुलन की दिशा में आगे बढ़ रहा है

# 5. समाज द्वारा किए गए ऐतिहासिक एवं वर्तमान प्रयास

समाज में सगाई एवं वैवाहिक संबंधों को सुगम बनाने के लिए विभिन्न कालखंडों में समाज, उसकी संस्थाओं तथा समाज के अग्रणी महानुभावों द्वारा समयानुकूल प्रयास किए जाते रहे हैं। परिस्थितियाँ बदलती रहीं, किन्तु समाज की चिंता एवं सकारात्मक पहल निरंतर बनी रही:

- **कुरीतियों के विरुद्ध वैचारिक जागृति:** जिस समय सगाई संबंधों की स्थापना में धन के आदान-प्रदान जैसी कुरीतियाँ प्रचलित थीं, उस समय समाज के अग्रणी महानुभावों ने इस विषय पर गंभीर चिंतन किया तथा अपने विचारों एवं दिशानिर्देशों के माध्यम से समाज को उचित मार्गदर्शन प्रदान किया।
- **सामाजिक मध्यस्थता:** सगाई संबंधों को लेकर पक्षकारों के मध्य उत्पन्न मतभेदों एवं कटुता की स्थितियों में समाज द्वारा हस्तक्षेप कर समाधान करने के अनेक उदाहरण मिलते हैं। समाज ने सदैव संबंधों को टूटने से बचाने तथा सौहार्द बनाए रखने का प्रयास किया।
- **अनौपचारिक संवाद का महत्व:** पूर्व समय में जब किसी सामाजिक, धार्मिक अथवा पारिवारिक अवसर पर समाजजन एकत्रित होते थे, तब रीति-रिवाजों, सामाजिक विषयों एवं वैवाहिक संबंधों पर गहन चर्चा होती थी। अनेक बार ऐसे अनौपचारिक संवादों के माध्यम से ही रिश्ते सहजता से तय हो जाया करते थे।
- **पत्रिकाओं और प्रकाशनों की भूमिका:** समाज की पत्रिकाओं एवं प्रकाशनों ने भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सन् 1980 में प्रकाशित *'हिंगलाज ज्योति'* तथा *'श्री हिंगलाज छात्रावास'* के वार्षिक प्रतिवेदनों आदि में वैचारिक लेख प्रकाशित होते थे। हिंगलाज ज्योति में सगाई योग्य युवक-युवतियों की जानकारी हेतु एक विशेष कॉलम भी प्रकाशित किया जाता था।
- **संस्थागत निर्देशिकाएँ:** समाज की संस्थाओं द्वारा समय-समय पर परिवार निर्देशिकाओं का प्रकाशन किया जाता रहा है। *अखिल भारतीय ब्रह्मक्षत्रिय खत्री महासभा* द्वारा 1980 के दशक में इस दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किए गए। व्यक्तिगत स्तर पर भी निर्देशिकाओं के प्रकाशन का भगीरथ कार्य किया गया। इनका उद्देश्य परिवारों के मध्य सूचनाओं का आदान-प्रदान बढ़ाना तथा वैवाहिक संबंधों को सरल बनाना था।
- **परिचय सम्मेलनों की समृद्ध परंपरा:** परिचय सम्मेलन एवं वर्तमान परिचय संगम की भी एक समृद्ध परंपरा रही है। सन् 1999 में जोधपुर में आयोजित परिचय सम्मेलन में विभिन्न स्थानों से आए अनेक अभ्यर्थियों एवं समाजबंधुओं ने भाग लिया। उस अवसर पर अभ्यर्थियों की निर्देशिका भी प्रकाशित की गई, जिसका उपयोग कई वर्षों तक होता रहा। ऐसे आयोजन अन्य स्थानों पर भी समय-समय पर आयोजित किए गए।
- **तकनीक-समर्थित परिचय संगम:** *परिचय संगम 2025* के रूप में महासभा द्वारा एक सुव्यवस्थित एवं तकनीक-समर्थित प्रयास किया गया, जिसमें प्रत्याशियों को खुलकर अपना परिचय प्रस्तुत करने का अवसर मिला। उनकी ई-बुक भी प्रकाशित की गई तथा इस प्रयास के सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए। इसी श्रृंखला में अब **परिचय संगम 2026** आयोजित किया जा रहा है। **परिचय संगम 2026 की टैगलाइन है - बेटी परणाओ-बहू पढाओ - महासभा मंत्री द्वारा दिये गये इस नारे में समाधान भी छिपा है।**

- **डिजिटल युग में नवाचार:** डिजिटल युग में भी समाज ने समय के साथ कदम मिलाकर रिश्तों की खोज को सरल बनाने के अदभुत प्रयास किए हैं:
    - सन् 2000 में *'ब्रह्मक्षत्रिय.नेट'* वेबसाइट का निर्माण व्यक्तिगत स्तर पर किया गया तथा 2010-11 में इसका उन्नत संस्करण विकसित किया गया, जिसमें परिवार पंजिका एवं मैट्रिमोनियल सेवाएँ उपलब्ध थीं।
    - इसी प्रकार *'हिंगलाजजयते.कॉम'* के माध्यम से भी समाज के एक अन्य व्यक्ति द्वारा सराहनीय प्रयास किए गए।
    - कोरोना काल में *'ब्रह्मक्षत्रिय जीवनसाथी ऐप'* सामने आया, जिसने वैवाहिक संबंधों की खोज को सरल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हाल ही में इसका उन्नत संस्करण भी जारी किया गया है, जिसमें अनेक उपयोगी सुविधाएँ जोड़ी गई हैं।
    - इसी वर्ष महासभा द्वारा **'खत्रीसंगम.ओआरजी' (khatrisangam.org)** पोर्टल प्रारंभ किया गया है, जिसमें फैमिली डायरेक्टरी, प्रोफेशनल्स डायरेक्टरी तथा 'परिचय संगम 2026' का संपूर्ण संचालन सुचारू रूप से किया जा रहा है। भविष्य में इस पोर्टल पर वैवाहिकी (मैट्रिमोनियल) सेवाएँ भी पूर्ण रूप से उपलब्ध कराए जाने की योजना है।

**जय श्री हिंगलाज।**

**परिचय संगम 2026 के अवसर पर 13 जून, 2026 को जारी आलेख**

## विचारक व लेखक

## लक्ष्मीचंद्र कीरी व मदनगोपाल धणदे

## अग्रेषणकर्ता

| | | |
|---|---|---|
| **जेठानंद कीरी**<br>**अध्यक्ष, महासभा** | **रतनलाल कीरी**<br>**संयोजक, परिचय संगम 2026** | **पुष्पकुमार भूत**<br>**महामंत्री, महासभा** |